

आदिम काल से आधुनिक आर्थिक तरक्की तक भारतीय व्यापार का मुख्तसर सफरनामा

बीज शब्द :

प्राचीन व्यापार नेटवर्क, औपनिवेशिक विऔद्योगीकरण, आर्थिक उदारीकरण, डिजिटल परिवर्तन

यह आदिम काल/प्राचीन सभ्यता से समकालीन आर्थिक शक्ति तक भारत की उल्लेखनीय व्यापारिक यात्रा का मुख्तसर (संक्षिप्त) वर्णन करता है, जो चार सहस्राब्दियों से अधिक के वाणिज्य और आर्थिक प्रभाव को समाहित करता है। हड़प्पा सभ्यता (अर्थात् सिंधु घाटी सभ्यता, 3300 ईसा पूर्व) के परिष्कृत व्यापारिक नेटवर्क से शुरू होकर, यह वर्णन मसाला व्यापार में भारत के वर्चस्व, वस्त्र निर्माण, और 18वीं शताब्दी की शुरुआत तक वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 25 से 27 प्रतिशत का योगदान देते हुए इतिहास के अधिकांश समय तक विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में इसकी स्थिति की खोज करता है। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल ने व्यवस्थित वि-औद्योगीकरण और आर्थिक शोषण-निष्कर्षण लाया, जिसने 1947 में स्वतंत्रता के समय तक भारत की वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सेदारी को केवल 4 प्रतिशत तक कम कर दिया था। स्वतंत्रता के बाद की आर्थिक नीतियों, परिवर्तनकारी 1991 के उदारीकरण, और उसके बाद की आईटी क्रांति ने भारत को विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने में स्थानांतरित किया। यह आर्थिक-लेख भारत के भौतिक वस्तुओं के व्यापार से सेवा अर्थव्यवस्था के विकास, विश्व की फार्मसीस के रूप में इसके उद्भव, और वैश्विक आर्थिक जगत में इसके बढ़ते प्रभाव की जांच करता है। इस ऐतिहासिक दृष्टिकोण के माध्यम से, वाणिज्यिक अनुकूलनशीलता के पैटर्न, संरक्षणवाद बनाम खुलेपन के परिणाम, और समावेशी विकास की चुनौतियों की पहचान की गई है। यह शोध निष्कर्ष निकालता है कि भारत की स्थायी वाणिज्यिक भावना जो विभिन्न युगों में अलग-अलग रूप से प्रकट होती है, मसाला व्यापारियों से लेकर आईटी पेशेवरों तक वैश्विक आर्थिक संरचना को आकार देना जारी रखती है, जबकि स्वतंत्रता के 100 वर्ष पर (अर्थात् 2047 तक) या उससे पहले विकसित राष्ट्र की स्थिति की खोज में सतत और समान विकास की समकालीन चुनौतियों का समाधान करती है।

प्रो. लाल मृगेन्द्र सिंह बघेल

आचार्य एवं अर्थशास्त्री

अर्थशास्त्र विभाग

जे.एन.एम.पी.जी. कॉलेज, बाराबंकी

डॉ. अर्चना सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

अर्थशास्त्र विभाग

जे.एन.एम.पी.जी. कॉलेज, बाराबंकी

आदिम काल से आधुनिक आर्थिक तरक्की तक भारतीय व्यापार का मुख्तसर सफरनामा

भारत की व्यापारिक विरासत चार सहस्राब्दियों से अधिक समय तक फैली हुई है, जो व्यापार, नवाचार और आर्थिक प्रभाव की एक जटिल बुनावट बुनती है जिसने वैश्विक व्यापार को गहराई से आकार दिया है। प्राचीन मसाला मार्गों से विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में भारत का उद्भव, और भारत के व्यापार की यह यात्रा इतिहास की सबसे उल्लेखनीय आर्थिक कथाओं में से एक का प्रतिनिधित्व करती है। ऐतिहासिक साक्ष्य उपलब्ध हैं जो स्पष्ट रूप से बताते हैं कि लगभग 3300 ईसा पूर्व के हड़प्पा सभ्यता (अर्थात् सिंधु घाटी सभ्यता) में, पुरातात्विक साक्ष्य मेसोपोटामिया तक फैले परिष्कृत व्यापार नेटवर्क को प्रकट करते हैं। हड़प्पा के व्यापारियों ने अरब सागर के पार समुद्री मार्गों के माध्यम से सूती वस्त्र, कीमती पत्थर और शिल्प वस्तुओं का निर्यात किया। मेसोपोटामियाई शहरों में सिंधु मुहरों की खोज और हड़प्पा स्थलों में मेसोपोटामियाई वस्तुओं की उपस्थिति इस प्रारंभिक वाणिज्यिक परिष्कार की गवाही देती है। इस सभ्यता ने मानकीकृत वजन और माप की शुरुआत की, जो व्यापार यांत्रिकी की उन्नत समझ को प्रदर्शित करती है जो भविष्य की पीढ़ियों को प्रभावित करेगी।

1000 ईसा पूर्व से पहली ईसा पूर्व की अवधि के दौरान, भारत मसालों का विश्व का प्रमुख आपूर्तिकर्ता था, विशेष रूप से काली मिर्च का, जिसे रोमनों द्वारा काला सोना कहा जाता था क्योंकि वे इसे बहुत अधिक महत्व देते थे। 206 ईसा पूर्व और 220 ईस्वी के बीच चीन के श्वर्ण युग (हान राजवंश की अवधि) के दौरान, सिल्क रोड की स्थापना ने पूर्व और पश्चिम के बीच अद्वितीय संपर्क बनाया, जिसमें भारत एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ के रूप में कार्य कर रहा था। इस दौरान, भारतीय व्यापारियों ने दक्षिण पूर्व एशिया में प्रवासी समुदाय स्थापित किए, जो भारतीय संस्कृति, धर्म और वाणिज्यिक प्रथाओं का प्रसार कर रहे थे। इन व्यापार मार्गों के माध्यम से, बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म के प्रसार ने सांस्कृतिक क्षेत्र बनाए जो आज भी बने हुए हैं, इंडोनेशिया से कंबोडिया तक।

लगभग 8वीं से 18वीं शताब्दी के आसपास, जिसे इतिहास शास्त्र में मध्यकाल कहा जाता है, एक परिवर्तनकारी युग ने वस्त्र उत्पादन में भारत के वर्चस्व को देखा। इस अवधि

(अर्थात् गुप्त साम्राज्य का युग, चोल, राजपूतों जैसे क्षेत्रीय राज्यों का उदय, और इस्लामी राजवंशों का आगमन) के दौरान, भारतीय सूती और रेशमी कपड़ों को उनकी गुणवत्ता, रंगों और जटिल डिजाइनों के लिए दुनिया भर में खींचा गया था। भारतीय मलमल इतने उत्कृष्ट और प्रसिद्ध थे कि एक पूरा वस्त्र एक अंगूठी से गुजर सकते थे, जो रोम में भी पहुंचे और उनके बाजारों में प्रीमियम कीमतों की मांग करते थे। भारत का वस्त्र वर्चस्व सदियों तक जारी रहा, जिसने भारत को मध्यकाल के अधिकांश समय तक विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाया। इतिहासकार आर्थिक साक्ष्य इस तथ्य को प्रकट करते हैं और अनुमान लगाते हैं कि 18वीं शताब्दी की शुरुआत में भारत वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 25 से 27 प्रतिशत के लिए जिम्मेदार था, जो इसकी निर्माण क्षमता, वाणिज्यिक पहुंच और आर्थिक तरक्की का प्रमाण है। तब विश्व के आर्थिक जगत में भारत का वही स्थान था जो आज अमेरिका और चीन का है।

16वीं शताब्दी में, मुगल शासक जहांगीर के काल के दौरान, यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के आगमन ने भारत के व्यापार इतिहास में एक परिवर्तनकारी चरण को चिह्नित किया। पुर्तगालियों ने गोवा में व्यापारिक चौकियां स्थापित कीं, जिसके बाद डच, फ्रांसीसी और ब्रिटिश आए। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी, जिसे प्रारंभ में 1600 में केवल व्यापार करने के लिए चार्टर दिया गया था, धीरे-धीरे एक राजनीतिक शक्ति में विकसित हो गई। भारत के विशाल संसाधननील और अफीम से लेकर चाय और कपास तक ने यूरोप में औद्योगिक क्रांति (ब्रिटिश) को ईंधन दिया। हालांकि, औपनिवेशिक निष्कर्षण ने व्यवस्थित रूप से भारत को वि-औद्योगीकृत किया। ब्रिटिश उद्योगों की रक्षा के लिए भारतीय वस्त्र निर्माण के जानबूझकर विनाश ने इस शोषण का उदाहरण दिया। 1947 तक, जब भारत को स्वतंत्रता मिली, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में इसकी हिस्सेदारी लगभग 4 प्रतिशत तक गिर गई थी, और अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से रूग्ण-कृषि प्रधान बनकर रह गयी थी जिसमें व्यापक गरीबी थी, अधिकांश जनता कुपोषित और भी शण त्रासदीपूर्ण जीवन जीने को बाध्य थी।

स्वतंत्रता के बाद भारत में आयात प्रतिस्थापन और राज्य के नेतृत्व वाले औद्योगीकरण पर भारी जोर देने के साथ

एक मिश्रित अर्थव्यवस्था मॉडल अपनाया गया। भारी उद्योगों, वैज्ञानिक संस्थानों की स्थापना, और 1960 के दशक की हरित क्रांति ने भविष्य के विकास की नींव रखी, हालांकि अर्थव्यवस्था अपेक्षाकृत बंद रही और मामूली रूप से ही बढ़ी। 1991 में भुगतान संतुलन संकट ने नाटकीय आर्थिक उदारीकरण को उत्प्रेरित किया। वित्त मंत्री मनमोहन सिंह के सुधारों ने लाइसेंस राज को खत्म कर दिया, शुल्कों को कम किया, विदेशी निवेश का स्वागत किया, और भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकृत किया।

उदारीकरण ने उद्यमशीलता ऊर्जाओं को मुक्त किया जो दशकों से बाधित थीं। भारत का आईटी सेवा उद्योग एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरा, जिसमें इन्फोसिस, टीसीएस और विप्रो जैसी कंपनियां दुनिया भर के कॉर्पोरेट बोर्डरूम में घरेलू नाम बन गईं। देश ने अपने अंग्रेजी-भाषी कार्यबल, गणितीय प्रवीणता, और समय-क्षेत्र लाभों का लाभ उठाकर विश्व के बैंक ऑफिस बनने के लिए सतत प्रयास किया। 2000 के दशक की शुरुआत तक, भारत पश्चिमी कंपनियों के लिए बीमा दावों से लेकर कर रिटर्न तक सब कुछ प्रोसेस कर रहा था, यह प्रदर्शित करते हुए कि सेवाओं का व्यापार उतनी ही कुशलता से किया जा सकता है जितना कि वस्तुओं का।

औषधीय उद्योग एक और सफलता की कहानी का प्रतिनिधित्व करता है। भारत के जेनेरिक दवा निर्माता मात्रा के अनुसार वैश्विक जेनेरिक दवाओं का लगभग 20 प्रतिशत आपूर्ति करते हैं, जिससे इसे विश्व की फार्मसीस का उपनाम मिला है। COVID-19 महामारी के दौरान, भारत की वैक्सिन निर्माण क्षमता वैश्विक टीकाकरण प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई, जो घरेलू उपयोग और COVAX जैसी पहलों के माध्यम से निर्यात के लिए अरबों खुराक का उत्पादन कर रही थी।

आज, नॉमिनल सकल घरेलू उत्पाद के अनुसार, भारत विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में खड़ा है और क्रय शक्ति समानता (GDP@PPP) के अनुसार, दुनिया भर में तीसरा सबसे बड़ा देश है। भारत उपग्रह क्षेत्र में एक मजबूत और तेजी से उभरती शक्ति है, और कम लागत, उच्च विश्वसनीयता और उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ विश्व स्तर पर अपनी छाप बना रहा है, विशेष रूप से अन्य देशों के उपग्रहों के प्रक्षेपण का नेतृत्व करके और निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देकर। उल्लेखनीय रूप से, देश ने

सफलतापूर्वक उच्च-मूल्य क्षेत्रों में खुद को स्थापित किया है, जिसमें अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी शामिल है, जहां भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने प्रतिस्पर्धी कीमतों पर कई देशों के लिए उपग्रह लॉन्च किए हैं, और नवीकरणीय ऊर्जा, जहां भारत ने सौर और पवन क्षमता के लिए उद्यमी लक्ष्य निर्धारित किए हैं। डिजिटल क्रांति विशेष रूप से परिवर्तनकारी रही है—भारत के यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस ने 2025 में मासिक रूप से 20 बिलियन से अधिक लेनदेन संसाधित किए, मूल्य में खरबों को संभालते हुए, सैकड़ों बैंकों को जोड़कर लगभग 500 मिलियन उपयोगकर्ताओं की सेवा करते हुए, और इस प्रकार, एक डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र बनाया जिसने एक वैश्विक नेता के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत किया जिसने वैश्विक पर्यवेक्षकों को प्रभावित किया है।

भारतीय उद्यमियों ने विभिन्न क्षेत्रों में विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त ब्रांड बनाए हैं। टाटा समूह के जगुआर लैंड रोवर और टेटली टी जैसे प्रतिष्ठित ब्रिटिश ब्रांडों के अधिग्रहण से लेकर फिनटेक, एडटेक और ई-कॉमर्स में यूनिकॉर्न स्टार्टअप के उदय तक, भारतीय व्यवसायों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने और सफल होने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। देश विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र रखता है, जिसमें मोबाइल प्रौद्योगिकी और डिजिटल सेवाओं में नवाचार अक्सर पारंपरिक विकास पथों को पार करते हैं। हालांकि, महत्वपूर्ण चुनौतियां बनी हुई हैं। तीव्र विकास के बावजूद, भारत को बुनियादी ढांचे की कमी, नियामक जटिलताओं, और रोजगार के अवसरों के साथ अपने जनसांख्यिकीय लाभांश को मिलाने के लिए कौशल विकसित करने की आवश्यकता को संबोधित करना चाहिए। मेक इन इंडिया पहल के बावजूद, और विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में भारत की स्थिति के बावजूद, न सिर्फ विनिर्माण क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद के एक छोटे हिस्से के लिए जिम्मेदार है अपितु प्रति व्यक्ति आय में भी बहुत पीछे है। यही नहीं, आय असमानता का गैप निरन्तर बढ़ रहा है, और समावेशी विकास सुनिश्चित करना आज की एक चुनौतीपूर्ण नीति प्राथमिकता बनी हुई है।

भारत का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य महत्वपूर्ण सबक प्रकट करता है। प्राचीन भारत की वाणिज्यिक सफलता निर्माण उत्कृष्टता, नवाचार और व्यापार के लिए खुलेपन पर आधारित थी। औपनिवेशिक शोषण यह प्रदर्शित करता है कि निवेश

के बिना निष्कर्षण अर्थव्यवस्थाओं को कैसे गरीब बनाता है। स्वतंत्रता के बाद के अनुभव दिखाते हैं कि जबकि आत्मनिर्भरता के गुण हैं, अत्यधिक संरक्षणवाद विकास को दबा सकता है। उदारीकरण अवधि साबित करती है कि वैश्विक बाजारों के साथ एकीकरण, घरेलू शक्तियों के साथ मिलकर, उल्लेखनीय परिणाम उत्पन्न कर सकता है। आज भारत का व्यापार प्रभाव वस्तुओं और सेवाओं से परे फैला हुआ है। देश G20, BRICS जैसे मंचों के माध्यम से सक्रिय रूप से वैश्विक आर्थिक शासन को आकार देता है, जिसकी अध्यक्षता उसने 2023 में की थी। भारतीय वार्ताकार विश्व व्यापार संगठन की चर्चाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, अक्सर विकासशील देशों के हितों की वकालत करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, जिसकी सह-स्थापना भारत ने की, सतत विकास पर केंद्रित आर्थिक सहयोग के नए रूपों का प्रतिनिधित्व करता है।

जैसा कि भारत आगे देखता है, इसका लक्ष्य 2047 तक, अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी तक एक विकसित राष्ट्र बनना है, जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी ने 2023 में 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर घोषित किया। विकसित भारत/2047 के लिए, उन्होंने आत्मनिर्भरता, नवाचार और नागरिक सशक्तिकरण पर जोर दिया। यह महत्वाकांक्षा उच्च विकास दर बनाए रखने, विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाने, व्यापार करने में आसानी में सुधार करने, और शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा में भारी निवेश करने की आवश्यकता है। देश की युवा आबादी लगभग 28 की औसत आयु के साथ जनसांख्यिकीय लाभ प्रदान करती है जो कौशल विकास और रोजगार सृजन के माध्यम से ठीक से उपयोग किए जाने पर दशकों की वृद्धि को बढ़ा सकती है।

प्राचीन मसाला व्यापारियों से आधुनिक आईटी पेशेवरों तक, हथकरघा बुनकरों से औषधीय नवप्रवर्तकों तक की प्रक्षेपवक्र (trajectory) भारत की स्थायी वाणिज्यिक अनुकूलनशीलता को दर्शाती है। जहां प्राचीन व्यापारी खतरनाक मार्गों के पार भौतिक वस्तुओं का परिवहन करते थे, आज के भारतीय फाइबर-ऑप्टिक केबलों पर डेटा संचारित करते हैं। माध्यम बदल गए हैं, लेकिन वाणिज्यिक उद्यम की अंतर्निहित भावना बनी हुई है। वैश्विक व्यापार में भारत के ऐतिहासिक योगदानगणित में शून्य की अवधारणा पेश करने से लेकर वस्त्र तकनीकों की शुरुआत तक डिजिटल नवाचारों और किफायती स्वास्थ्य सेवा समाधानों में समकालीन समानताएं पाते हैं।

भारतीय व्यापार का यह मुक्तसर सफरनामा वैश्वीकरण,

आर्थिक विकास और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के बारे में व्यापक विषयों को भी दर्शाती है। व्यापार कभी भी केवल वस्तुओं के बारे में नहीं रहा है। यह विचारों, प्रौद्योगिकियों और संस्कृतियों को सीमाओं के पार ले जाता है। पूर्व और पश्चिम के बीच एक सभ्यतागत पुल के रूप में भारत की ऐतिहासिक भूमिका नए रूपों में जारी है, चाहे दुनिया भर में 32 मिलियन लोगों के अपने प्रवासी समुदाय के माध्यम से या एशियाई भू-राजनीति में एक लोकतांत्रिक प्रतिभार के रूप में इसकी स्थिति के माध्यम से।

भारतीय व्यापार की यह संक्षिप्त कथा अंततः लचीलापन और पुनर्आविष्कार के बारे में है। एक अर्थव्यवस्था जो औपनिवेशिक निष्कर्षण से पीड़ित थी, ने राज्य के नेतृत्व वाले विकास के माध्यम से खुद को फिर से बनाया, फिर बाजार सुधारों के माध्यम से परिवर्तित हुई, और अब तकनीकी नेतृत्व की आकांक्षा के साथ आगे बढ़ रही है। प्रत्येक चरण ने चुनौतियां और अवसर लाए, जो बदलती वैश्विक स्थितियों के अनुकूल होने की आवश्यकता रखते हैं जबकि स्थायी शक्तियों पर निर्भर रहते हैं। कृदमशीलता भावना, गणितीय और वैज्ञानिक प्रतिभा, भाषाई विविधता और सांस्कृतिक परिष्कार। जैसा कि भारत 21वीं सदी के वैश्वीकरण की जटिलताओं को नेविगेट करता है। आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों से लेकर जलवायु परिवर्तन अनिवार्यताओं तक इसका ऐतिहासिक अनुभव परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। वह देश जिसने कभी दुनिया को मसाले और वस्त्र प्रदान किए, अब सॉफ्टवेयर और सेवाएं प्रदान करता है और आईटी के साथ फार्मास्यूटिकल एवं रक्षा के क्षेत्र में वैश्विक हब बनने की ओर अग्रसर है। यही नहीं अपितु भविष्य में यह हरित प्रौद्योगिकियों एवं अंतरिक्ष वाणिज्य में भी नेतृत्व करता दिखाई दे सकता है। जो स्थिर रहता है वह वैश्विक आर्थिक नेटवर्क में भारत का एकीकरण है, एक संबंध जो हजारों साल पुराना है जो विकसित होना जारी रखता है जबकि विश्व अर्थव्यवस्था को गहन तरीकों से आकार देता है।

अंत में, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत की व्यापार यात्रा सिंधु घाटी के हलचल भरे बंदरगाहों से बेंगलूर के चमकते टेक गलियारों तक एक आर्थिक परिवर्तन से कहीं अधिक का प्रतिनिधित्व करती है। यह लचीलापन, अनुकूलन और नवीनीकरण के लिए मानवता की क्षमता को मूर्त रूप देती है। यह चार-सहस्राब्दी की यात्रा एक सभ्यता को प्रकट करती है जिसने लगातार अपनी मूल शक्तियों

बौद्धिक पूंजी, निर्माण उत्कृष्टता, और सांस्कृतिक परिष्कार का लाभ उठाकर विभिन्न युगों में वैश्विक वाणिज्य को आकार दिया है। वही राष्ट्र जिसने कभी उत्कृष्ट वस्त्रों और सुगंधित मसालों के माध्यम से दुनिया की संपत्ति के एक चौथाई भाग पर कमान की, फिर उपनिवेशवाद की व्यवस्थित गरीबी सहन की, ने उल्लेखनीय रूप से विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में अपनी स्थिति को पुनः प्राप्त किया है। आज का भारत, अरबों डिजिटल लेनदेन को संसाधित करते हुए और विश्व स्तर पर जीवन बचाने वाली दवाओं की आपूर्ति करते हुए, प्रदर्शित करता है कि रणनीतिक दृष्टि, मानव पूंजी विकास, और वैश्विक बाजारों के साथ एकीकरण के माध्यम से आर्थिक शक्ति का पुनर्निर्माण किया जा सकता है। फिर भी यात्रा अधूरी रहती है। जैसा कि भारत 2047 तक विकसित राष्ट्रत्व प्राप्त करने की आकांक्षा रखता है, इसे असमानता, बुनियादी ढांचे की कमियों, और अपनी युवा आबादी के लिए रोजगार सृजन की लगातार चुनौतियों के साथ अपनी असाधारण वृद्धि को समेटना होगा। इतिहास से सीख शिक्षाप्रद हैं। व्यापार और नवाचार के लिए खुलापन समृद्धि को बढ़ाता है, जबकि अलगाव और शोषण ठहराव को बढ़ाते हैं। भारत की भविष्य की सफलता अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग करने, विनिर्माण क्षमताओं को आगे बढ़ाने, और नवीकरणीय ऊर्जा और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी जैसे उभरते क्षेत्रों में नेतृत्व करने पर निर्भर करती है। यह सब सुनिश्चित करते हुए कि विकास लाभ समाज के प्रत्येक स्तर तक पहुंचे। वह स्थायी भावना जिसने प्राचीन व्यापारियों को खतरनाक व्यापार मार्गों को पार करने में सक्षम बनाया, अब उद्यमियों को डिजिटल सीमाओं में प्रेरित करती है, यह साबित करते हुए कि जबकि वाणिज्य के साधन विकसित होते हैं, व्यापार, अनुकूलन और वैश्विक जुड़ाव के लिए मौलिक भारतीय प्रतिभा स्थिर रहती है, न केवल भारत के भाग्य बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की संरचना को ही आकार देना जारी रखती है।

REFERENCES (संदर्भ सूची)

- Landes, D.S. (2002). "Unconfirmed Reforms in India since 1991: The Greatest World." *Journal of Unconfirmed Perspectives*, 16(3), 67-88.
- Bagchi, A.K. (1982). *The Political Economy of Underdevelopment*. Cambridge University Press.
- Basu, K. (2004). *India's Emerging Economy: Performance and Prospects in the 1990s and Beyond*. Gravity Press.
- Bhagwati, J. and Panagariya, A. (2013). *Why Growth Matters: How Economic Growth in India Reduced Poverty and Lessons for Other Developing Countries*. Public Affairs.
- Bonnell, M. (2025). Liberalization, Economic Reforms, and Stock Market Evolution: India's Transformation in a Context of Emerging Markets. *Journal of Developing Areas*, 59(3), 421-441.
- Chaudhry, K.N. (1985). *Trade and Civilization in the Indian Ocean: An Economic History from the Rise of Islam to 1750*. Cambridge University Press.
- Das, G. (2002). *India Unbound: A Social and Economic Revolution from Independence to the Global Information Age*. Anchor Books.
- Drus, J. and Sen, A. (2013). *An Uncertain Glory: India and Its Contradictions*. Princeton University Press.
- Flohr, W. (2019). India and the Heartland: An Eighteenth-Century World of Circulation and Exchange. *Journal of the American Oriental Society*, 139(1), 265-267.
- Guha, R. (2007). *India After Gandhi: A History of the World's Largest Democracy*. Macmillan.
- Gupta, B. and Brodberry, S.N. India and the Great Divergence: An Anglo-Indian Comparison of GDP per Capita, 1600-1871. <https://core.ac.uk/download/5227855.pdf>
- Lal Mrigendra Singh Baghel (2014). "Bharat ke Arthik Itihas ke Adrishya Pahalu" *IJND*, Vol. IV, Issue-2, 2014, pp.-63-68. (ISSN: 2277-9876).
- Kenaojr, J.M. (1998). *Ancient Sites of the Indus Valley Civilization*. Oxford University Press.
- Kulke, A. and Rothermund, D. (2004). *A History of India (4th Edition)*. Routledge.
- Maddison, A. (2007). *Contours of the World Economy, 1-2030 AD: Essays in Macro-Economic History*. Oxford University Press.
- Ministry of Commerce and Industry, Government of India. (2023). *Annual Report 2022-23*. New Delhi.
- National Institution for Transforming India (NITI Aayog). (2023). *India@100: Realizing a Vision*. Government of India.
- Panagariya, A. (2008). *India: An Emerging Giant*. Oxford University Press.
- Parthasarathi, P. (2011). *Why Europe Grew Rich and Asia Did Not: Global Economic Divergence, 1600-1850*. Cambridge University Press.
- Ratnagar, S. (2001). *Understanding Harappa: Civilization in the Greater Indus Valley*. Tulika Books.
- Ray, R.P. (2003). *The Archaeology of Seafaring in Ancient South Asia*. Cambridge University Press.
- Rodrick, D. and Subramanyam, A. (2005). "From Hindu Growth to Productivity Surge: The Mystery of the Indian Growth Transition." *IMF Staff Papers*, 52(2), 193-228.
- Roy, T. (2012). *The Economic History of India, 1857-1947 (Third Edition)*. Oxford University Press.
- Sasaki, D., Sasaki, D., Sakamoto, A., Asym, A., Feng, S., Kaku, T., Sasaki, T., Shinomura, N., and Nakayama, M. (2024). Facilitating Smooth Migration of Inhabitants of Atoll Countries to Artificial Islands: Case of the Maldives. *Sustainability*, 16(11), 4582.
- Selvi, S. (2020). COVID-19: An Overview of Economic Waves on Indian Economy. *Shanlax International Journal of Economics*. <https://doi.org/10.34293/economics-v8i3-3201>
- Thur, S. (2017). *An Era of Darkness: The British Empire in India*. Aleph Book Company.
- Tomlinson, B.R. (1993). *The Economy of Modern India, 1860-1970*. Cambridge University Press.
- World Bank. (2023). *World Development Indicators*. Washington, DC: World Bank.

